(4) <u>स्वरस्थान नियम का आलाप</u> – प्राचीन काल में आलाप के एक विशेष शैली को स्वस्थान नियम कहते थे, उसमें राग के सभी लक्षण का पालन करते हुए आलाप को मुख्य चार भागों में विभाजित किया जाता था जिसे स्वस्थान कहते थे। चारों स्वरस्थानों का प्रयोग क्रम से एक दूसरे के बाद होता था। प्रथम स्वस्थान में अंश स्वर से नीचे के स्वरों में आलाप करना पड़ता था। द्वितीय स्वरस्थानों में अंश स्वर तक आलाप किया जाता था, तृतीय स्वरस्थानों में अर्धनिकट स्वरों में आलाप होता था। तथा अन्तिम स्वरस्थानों में द्विगुण लयकारी से तथा ऊपर के स्वरों तक आलाप होता था, तत्पश्चात स्थायी के स्वर पर आकर न्यास किया जाता था। लेकिन वर्तमान समय में इसका प्रचार नहीं है।

(5) <u>झाला</u> – तंत्र वाद्यों में बाज और चिकारी के तारों के संयोग से विभिन्न बोल बजाने को "झाला" कहते हैं। इसका प्रयोग विशेषतः सितार और सरोद वाद्यों में होता है, राजखानी गत समाप्त करते समय जब द्रुतलय हो जाते हैं उसे झाला कहते हैं और झाला बजाते हैं।